10

प्राथमिक शिक्षकों की विशिष्ट चुनौतियाँ
कश्मीर के संदर्भ में एक अध्ययन

अखिलेश कुमार गौतम*

विद्यालय में स्थित कोई भी शिक्षण-अधिगम परिदृश्य अपनी दैनिक प्रक्रियाओं में, अपने साथ कुछ मुद्दे और चुनौतियाँ लिए होता है। कई बार यह मुद्दे और चुनौतियाँ शिक्षण प्रक्रियाओं से जुड़े होते हैं तो कई बार अधिगम प्रक्रियाओं से संबंधित होते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं एवं इनसे जुड़े मुद्दों और चुनौतियों के बीच शिक्षक एक महत्वपूर्ण भूमिका में होता है। यह भूमिका अपनी मूल प्रकृति में विभिन्न प्रकार की ज़िम्मेदारियाँ और जवाबदेही धारण किए होती है। परंतु बात जब ऐसे क्षेत्र की हो, जो एक लंबे समय से विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक द्वंद्वों का केंद्र रहा हो, तो शिक्षक की ये ज़िम्मेदारियाँ और जवाबदेही एकदम भिन्न और विशिष्ट रूप में उपस्थित होती हैं। प्रस्तुत शोधपत्र एक ऐसे ही क्षेत्र कश्मीर में किए गए एक वृहत् शोध का हिस्सा है, जिसके अंतर्गत शोधार्थी ने सरकारी विद्यालयों का अवलोकन किया और उनमें पढ़ाने वाले शिक्षकों के साथ विस्तृत साक्षात्कार किए। प्रस्तुत शोध पत्र यह बताने का प्रयास करता है कि एक विशिष्ट संघर्ष क्षेत्र के शिक्षक विद्यालय की भिन्न प्रक्रियाओं में किस प्रकार के मुद्दों का सामना करते हैं। प्रस्तुत पत्र यह भी बताने का प्रयास करता है कि इन विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षक प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने के दौरान किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करते हैं। प्रस्तुत शोध पूर्ण रूप से गुणात्मक शोध है और अन्वेषणात्मक शोध विधि के अंतर्गत बुना हुआ है। शोध प्रविधियों के रूप में असंरचित साक्षात्कार और गहन अवलोकन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तावना

"शिक्षक वास्तव में बच्चों के भविष्य को ढालते हैं, अतः हमारे राष्ट्र के भविष्य को भी ढालते हैं। शिक्षकों के माध्यम से ही हमारे बच्चों में मूल्यों, ज्ञान, समानुभूति, रचनात्मकता, नैतिक मूल्य, जीवन कौशल और सामाजिक ज़िम्मेदारियों का विकास होता है। इस प्रकार से शिक्षक शिक्षा प्रणाली के केंद्र में है और एक प्रगतिशील, न्यायी, शिक्षित और संपन्न समाज की ओर अग्रसर करने के लिए एक आवश्यक माध्यम है।" *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) 2019, पृष्ठ संख्या 157* *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (ड्राफ़्ट) 2019*, शिक्षक की भूमिका और ज़िम्मेदारियों की सरल शब्दों में व्याख्या करती है और शिक्षा प्रणाली में शिक्षक के महत्त्व और स्थिति को स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करती है।

* *शोधार्थी, पी.एच.डी.* शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

© NCERT not to be republished

शिक्षक से यह सभी अपेक्षाएँ जहाँ एक ओर शिक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एक विशिष्ट स्थान प्रदान करती हैं, वहीं दूसरी ओर ये अपेक्षाएँ शिक्षक के कंधों पर राष्ट्र की उम्मीदों का भार भी रख देती हैं। शिक्षकों की भूमिकाओं के संबंध में और शिक्षा जगत की अपेक्षाओं के विषय में *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* भी एक विस्तृत विमर्श प्रस्तुत करती है, जिसके अंतर्गत वह विभिन्न अध्यायों में शिक्षकों से विभिन्न प्रकार की अपेक्षाओं का जिक्र करती है और उनकी भूमिकाओं के संबंध में उन्हें निर्देशित भी करती है। विभिन्न उम्मीदों और अपेक्षाओं के इस भार के साथ जब शिक्षक विद्यालय में अपनी भूमिकाओं का निर्वाह कर रहा होता है तो प्रायः विभिन्न चुनौतियों का सामना करता है। लवीना और मोंटेरो (2017) इस संबंध में प्राथमिक शिक्षकों को उपलब्ध निम्न मासिक आय, सीमित विद्यालय संसाधन, पाठ्यचर्या को लेकर स्पष्ट निर्देशन का अभाव आदि कारणों को प्राथमिक शिक्षकों की प्रमुख समस्याओं के रूप में प्रकट करती हैं। अगर बारीकी से अध्ययन करें तो प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों की चुनौतियाँ अन्य शिक्षकों की चुनौतियों से प्रकृति में भिन्न होती हैं क्योंकि वे प्रायः छोटे बच्चों के साथ संवाद कर रहे होते हैं, जिनकी आवश्यकताएँ अन्य आयु वर्ग के विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न होती हैं। चूँकि शिक्षक को एक ही समय में कई भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। इस संदर्भ में जनेले कॉक्स (2019) लिखते हैं, "प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक की भूमिका मात्र शिक्षण योजना तक सीमित नहीं है, वर्तमान समय में यह प्राथमिक शिक्षकों को अभिभावकों, अनुशासनकर्ताओं, परामर्शदाताओं, प्रेरणा स्रोत, योजना निर्माता आदि सभी भूमिकाओं को एक साथ निर्वाह करना पड़ता है।"

बात जब एक ऐसे क्षेत्र के शिक्षकों की हो जो पिछले कई दशकों से हिंसक संघर्ष से प्रभावित रहा है तो शिक्षक की भूमिकाएँ और दैनिक जीवन की चुनौतियाँ बिलकुल भिन्न स्वरूप में प्रकट होती हैं। जिसके संबंध में करामी (2016) लिखते हैं, "एक हिंसक संघर्ष क्षेत्र में शिक्षक आस-पास घट रही प्रत्येक घटना से प्रभावित होते हैं जिसके कारण वे कई बार भयानक मानसिक दबाव का सामना करते हैं, जिससे उनमें अवसाद और अस्थिरता जैसे लक्षण प्रकट होते हैं और वे अपनी शिक्षक की पहचान और विद्यालय को खोते हुए प्रतीत होते हैं।" कटोटो (2016) भी मानते हैं कि द्वंद्व क्षेत्रों में शिक्षक ऐसी चुनौतियों और समस्याओं का सामना अपने दैनिक जीवन में करते हैं जिनको उनके प्रशासनिक विभाग और प्राधिकारी सामान्यतः नहीं देख पाते, जिसके कारण शिक्षकों को स्वयं ही इन चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है। यूनेस्को का एक दस्तावेज़, *दी हिडेन क्राइसिस—आर्मड कॉन्फ़्लिक्ट एंड एजुकेशन* (2011) भी एक संघर्ष क्षेत्र में शिक्षकों की चुनौतियों और समस्याओं पर प्रकाश डालता है जो शिक्षकों के अपने मानसिक स्तर पर संघर्ष का प्रभाव और उस मानसिक स्थिति के साथ शिक्षण कार्य की चुनौतियों पर चर्चा करता है। मनु शर्मा और शोएब मुहम्मद (2019) भी कश्मीर के माहौल का कश्मीर की शिक्षा व्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन प्रस्तुत करते हैं और उन चुनौतियों और मुद्दों पर विस्तार से चर्चा करते हैं जिनको कश्मीर

© NCERT not to be republished

की शिक्षा व्यवस्था प्रत्यक्ष रूप से महसूस करती है। लेकिन इन चुनौतियों और मुद्दों के बाद भी कश्मीर में विद्यालयी शिक्षा को बनाए रखने के लिए निरंतर प्रयास जारी रहे हैं। यह प्रयास कई बार प्रशासन की ओर से किए जाते हैं तो अधिकांशतः शिक्षकों की ओर से भी किए जाते रहे हैं। इस संबंध में हमारे समक्ष कई शोध स्रोत उपलब्ध हैं। मुदासिर अहमद और ठानिकोडी (2016) इस संबंध में एक शोधपत्र प्रस्तुत करते हैं जिसके अंतर्गत वे प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कश्मीर की शिक्षा व्यवस्था में शांति और विकास को चिह्नित करते हैं। प्रस्तुत पत्र भी एक विशिष्ट संघर्ष क्षेत्र कश्मीर के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की विभिन्न चुनौतियों पर एक अध्ययन प्रस्तुत करता है और इन परिस्थितियों में भी प्राथमिक शिक्षकों के प्रयासों का गहन विश्लेषण करता है।

शोध प्रश्न और उद्देश्य

प्रस्तुत शोध मुख्य रूप से यह जानने का प्रयास करता है कि एक संघर्ष क्षेत्र में कार्य करने वाले प्राथमिक शिक्षक अपने दैनिक शिक्षण कार्य के दौरान किस-किस प्रकार की विशिष्ट चुनौतियों का सामना करते हैं? यह शोध प्रश्न शोधार्थी को शोध का एक उद्देश्य प्रदान करता है जिसके अंतर्गत शोधार्थी कश्मीर के सरकारी विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षकों की विशिष्ट चुनौतियों का अन्वेषणात्मक अध्ययन करता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध एक संघर्ष क्षेत्र के एक गतिशील सामाजिक संदर्भ में दो सरकारी विद्यालयों के अध्ययन से संबंधित है। शोध क्षेत्र की अनिश्चितता और शोध संदर्भ की गतिशीलता, शोधार्थी के समक्ष कुछ जटिलताएँ लेकर उपस्थित थी जिनके संदर्भ में शोधार्थी को एक ऐसे शोध दर्शन का चयन करना था जो शोधार्थी को उपरोक्त परिस्थितियों में गहन शोध करने का अवसर प्रदान करे। गुणात्मक शोध दर्शन एक ऐसा ही शोध दर्शन है जो शोधार्थी को शोध क्षेत्र की गतिशीलता और परिवर्तनशीलता के अंतर्गत मानवीय व्यवहारों और विचारों के संदर्भ में अध्ययन करने का अवसर प्रदान करता है। शोध विधि के रूप में शोधार्थी ने अन्वेषणात्मक शोध विधि का चयन किया, जिसके अंतर्गत असंरचित साक्षात्कार और गहन अवलोकन प्रविधियों का प्रयोग किया गया। प्रतिचयन के रूप में दो सरकारी विद्यालयों का चयन किया गया जो क्रमशः पुलवामा और बारामूला जिले में स्थित थे। इन विद्यालयों में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाने वाले 10 शिक्षकों को शोध का हिस्सा बनाया गया। शोध आचार नीति के अंतर्गत विद्यालयों और शिक्षकों की पहचान पूर्ण रूप से गुप्त रखी गई है।

शोध के आँकड़ों को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण ढंग से विश्लेषण कर जो परिणाम प्राप्त हुए वे निम्नलिखित हैं—

विद्यालयों के खुलने की अनियमितता और पाठ्यक्रम समय पर पूरा कराने का दबाव

प्रस्तुत अध्ययन के दौरान एकत्रित आँकड़े यह प्रतिबिंबित करते हैं कि कश्मीर में उपस्थित राजनीतिक द्वंद्व लोगों के दैनिक जीवन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। शिक्षक मानते हैं कि इस द्वंद्व के कारण कश्मीर में अकसर माहौल कुछ इस प्रकार का होता है कि

© NCERT not to be republished

विद्यालय नियमित रूप से नहीं खुलते हैं। कई बार ऐसा कुछ राजनीतिक समूहों द्वारा अनिश्चित बंद या हड़ताल के कारण होता है तो कई बार विद्यार्थियों की सुरक्षा के कारण विद्यालयों को बंद कर दिया जाता है। ऐसे में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में आवश्यक निरंतरता नहीं आ पाती है। एक शिक्षक के शब्दों में, "2016 में बस 65–70 दिन असकूल (स्कूल) खुला। ऐसे में बच्चे भी खुद को तैयार नहीं कर पाते। कई बार माँ-बाप बच्चे की हिफाज़त के लिए उसको असकूल (स्कूल) नहीं बेजते (भेजते)। इससे हमको भी वख्त (वक्त) नहीं मिलता कि सलेबस (पाठ्यक्रम) पूरा करवा सकें।" शिक्षण-अधिगम के लिए उपलब्ध अपर्याप्त समय के कारण शिक्षक प्रायः एक प्रकार के दबाव में रहते हैं जो अपनी भूमिकाओं को पूरा न कर पाने और निश्चित पाठ्यक्रम को पूरा न कर पाने के कारण पैदा होता है। यह दबाव एक बिलकुल अलग तरह का दबाव है जिसमें शिक्षक स्वयं को पूर्ण रूप से असहाय पाते हैं। एक अन्य शिक्षक के शब्दों में, "हम क्या करें...यह बच्चे इतना कुछ सीखना चाहते हैं। हमारे पास बी (भी) इतना कुछ है करवाने को...पर कुछ भी टीक (ठीक) से नहीं हो पाता है। हम खाका (योजना) बनाते हैं कलास (कक्षा) के लिए, फिर पता चलता है कि असकूल (स्कूल) तो खुलेगा ही नहीं...तो मायूसी होती है।" शिक्षकों के इस प्रकार के विचार यह स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करते हैं कि किस प्रकार माहौल की अनिश्चितता शिक्षकों को अपनी भूमिकाओं के संबंध में निराश करती है।

विद्यार्थियों की मनःस्थिति और शिक्षकों के प्रयास

विद्यार्थी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक अति महत्वपूर्ण पक्ष है। संपूर्ण विद्यालयी शिक्षा इसके आस-पास रची गई है। विद्यार्थी की सीखने की प्राकृतिक अभिरुचि और जिज्ञासा ही शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को जीवन प्रदान करती है। परंतु एक ऐसे क्षेत्र में जहाँ दैनिक जीवन में एक प्रकार की अनिश्चितता और द्वंद्व उपस्थित हो, परिस्थितियाँ विद्यार्थियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं। शिक्षक विद्यार्थियों पर इन परिस्थितियों के नकारात्मक प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से महसूस करते हैं और मानते हैं, "छोटे बच्चों के लिए यह माहौल बहुत मुश्किलात (कठिनाई) पैदा करते हैं उनको किसी हुकूमत के मसलों से कोई लेना-देना नहीं पर पॉलिटिकल (राजनीतिक) मसलों ने जो हालात खड़े किए हैं उनका बच्चों के दिमाग पर बुरा असर होता है। बच्चे सहमे हुए से असकूल (स्कूल) आते हैं.... ये अपने आस-पड़ोस में होने वाला वॉइलेंस (हिंसा) देखते हैं तो डरे हुए रहते हैं कई बार.... अब हमारे सामने दो मसले होते हैं... पहले तो बच्चों को कलास (कक्षा) के लिए तैयार करें... फिर कुछ बताएँ" (साक्षात्कार के दौरान एक शिक्षिका)। शोधार्थी ने शोध के दौरान स्पष्ट रूप से पाया कि शिक्षक विद्यार्थियों को कक्षा के लिए तैयार करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास करते हैं जिसमें कोई रोचक कहानी सुनाना या कोई मनोरंजक गतिविधि करवाना प्रमुख रूप से सम्मिलित है। इन सभी प्रयासों से शिक्षक विद्यार्थियों को उन विषयों तक ला पाते हैं जिन पर कक्षा में कार्य करना है। अधिकांशतः यह कहानियाँ स्थानीय प्रचलित कहानियाँ होती हैं जो कई बार कश्मीरी भाषा में होती हैं। शिक्षकों के इस प्रकार के कई प्रयासों के बाद विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम की विषयवस्तु पढ़ाना शुरू

© NCERT not to be republished

किया जाता है। शोध के दौरान किए गए अवलोकन स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि यह एक जटिल कार्य होता है और इसके लिए विशेष तरह के विशिष्ट कौशल की आवश्यकता पड़ती है।

मौलिक सुविधाओं की स्थिति

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सार्थक बनाने में एक अनुकूल माहौल और संरचना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अकसर सरकारी विद्यालयों के पास ये दोनों दशाएँ यथोचित रूप से उपस्थित नहीं होती हैं परंतु फिर भी आपसी सहयोग से विद्यालय को शिक्षण-अधिगम के लिए तैयार किया जाता है। इसके बावजूद बात जब एक ऐसे विशिष्ट क्षेत्र के सरकारी विद्यालय की हो जहाँ माहौल में एक भिन्न प्रकार की अनिश्चितता और उथल-पुथल हो तो विद्यालय की संरचनात्मक विशेषताओं पर काफी कुछ निर्भर हो जाता है। बात जब विद्यालय की संरचना की हो तो कुछ मौलिक सुविधाओं की अपेक्षा विद्यालय से की जाती है, जिसमें कक्षाओं का प्रबंध, विद्यार्थियों की सुरक्षा, स्वच्छ शौचालय, पुस्तकालय, प्राथमिक चिकित्सा किट, शिक्षकों के लिए एक अलग कक्ष आदि प्रमुख हैं। ये सभी संरचनात्मक सुविधाएँ विद्यालय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने में सकारात्मक भूमिका निभाती हैं। प्राथमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए ये सभी मूलभूत सुविधाएँ अति आवश्यक हो जाती हैं। इन मौलिक सुविधाओं में से अगर कोई भी अनुपस्थित होती है तो उसका अप्रत्यक्ष भार शिक्षकों पर आ जाता है। प्रस्तुत शोध भी इस तथ्य की पुष्टि करता है कि प्राथमिक विद्यालयों में किसी भी मौलिक सुविधा की अनुपस्थिति शिक्षकों की ज़िम्मेदारी को अत्यधिक बढ़ा देती है, जिसका नकारात्मक प्रभाव शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर पड़ता है। शिक्षक के शब्दों में, "छोटे बच्चों के साथ ज़्यादा संजीदा रहना पड़ता है... यह यहाँ-वहाँ खेलते हैं... तो किसी को अगर चोट लग जाए तो हमारी ही ज़िम्मेदारी होती है सारी... इसलिए हमने अपने पैसे से ही एक फ़र्स्ट ऐड किट (प्राथमिक चिकित्सा किट) खरीद के असकूल (स्कूल) में रख रखी है।" ऐसा ही एक उदाहरण शौचालय को लेकर देखने को मिलता है जिसमें शिक्षक ये दावा करते हैं कि जो शौचालय सरकार ने बनाकर दिया था, वह तो पिछले साल आई बाढ़ में खराब हो गया। ये उदाहरण स्पष्ट रूप से प्रतिबिंबित करता है कि प्राथमिक विद्यालय में इन मौलिक सुविधाओं का महत्व इतना अधिक है कि अंत में शिक्षक स्वयं के पैसे से ही विद्यार्थियों की सुविधा के लिए कार्य करवाते हैं। इस प्रकार के प्रयास शिक्षकों की आर्थिक स्थिति को तो प्रभावित करते हैं परंतु शिक्षक यह जानते हैं कि विद्यालय में आने वाले छोटे बच्चों के लिए मौलिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं होंगी तो या तो उनके अभिभावक उन्हें विद्यालय भेजना बंद कर देंगे या फिर बच्चों की अभिरुचि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कम होगी। एक अन्य शिक्षिका के शब्दों में, "छोटे बच्चों का ज़्यादा ख्याल रखना पड़ता है, इतने मुश्किलात से वो असकूल (स्कूल) आते हैं अगर उनको यहाँ सहूलियत न हो तो नहीं आएँगे इसलिए हमें ही तोडी (थोड़ी) मेहनत करनी पड़ती है कि कम से कम कुछ तालीम पूरी हो जाए इनकी।" इस प्रकार स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं कि एक प्राथमिक शिक्षक की भूमिकाओं का विस्तार शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं से बाहर भी कितना विस्तृत है। यहाँ शिक्षकों

© NCERT not to be republished

का विद्यार्थियों के साथ एक भावात्मक मानवीय जुड़ाव भी प्रस्तुत होता है, जिसके लिए शिक्षक अपनी सामान्य भूमिकाओं के बाहर जाकर भी कार्य कर रहे हैं।

शिक्षकों की विशिष्ट ज़िम्मेदारियाँ

जिन विद्यालयों में प्रस्तुत शोध किया गया उसमें प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की आयु 5 से 11 वर्ष के बीच की है। इस आयु वर्ग के बच्चे विद्यालय से संबंधित कुछ कार्यों के लिए अपने अभिभावकों और शिक्षकों पर निर्भर करते हैं जिसमें घर से विद्यालय आना और विद्यालय से घर जाना प्रमुख है। सामान्य परिवेश में यह एक सामान्य कार्य है जिसका निर्वाह कई माध्यमों से होता है। परंतु शोध क्षेत्र के संदर्भ में यह कार्य अपने आप में कुछ विशिष्टता लिए हुए थे। शिक्षक मानते हैं कि पिछले कुछ समय से क्षेत्र में स्थिति इस तरह की बनी हुई है कि जैसे ही कहीं पर पत्थरबाज़ी, बंद, हड़ताल, सुरक्षा बलों की उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ आदि घटनाएँ आदि होती हैं तो विद्यालयों को अचानक ही बंद करने और विद्यार्थियों को घर भेजने का आदेश आ जाता है। ऐसे में उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थी तो स्वयं अपने घरों तक जाने में सक्षम होते हैं परंतु प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी स्वयं विद्यालय से अपने घर जाने में सक्षम नहीं होते हैं। इसलिए उनकी सारी ज़िम्मेदारी उनके शिक्षकों पर आ जाती है। एक शिक्षक के शब्दों में, "असकूल (स्कूल) को कबी (कभी) बंद होने का फरमान आ जाता है। ऐसे में बच्चों की ज़िम्मेदारी तो अमारी (हमारी) है। अमको (हमको) देकना (देखना) होता है कि बच्चे अपने घर सही से पहुँचे। अम (हम) नई (नहीं) देकेगे (देखेंगे) तो कौन देकेगा (देखेगा)।" विद्यालय के अवलोकनों से स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है कि ऐसी परिस्थिति में या तो शिक्षक विद्यालय में बच्चों के साथ रुकते हैं और उनके अभिभावकों के आने की प्रतीक्षा करते हैं या स्वयं विद्यार्थियों को उनके घरों तक पहुँचा आते हैं। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि इस पूरी प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों को अपनी सुरक्षा और अपने परिवारों की सुरक्षा की चिंता भी होती है। एक शिक्षिका के शब्दों में, "हमको असकूल (स्कूल) के बच्चों की फिकर (फिक्र) तो होती ही है। पर हमें अपने घर की भी फिकर (फिक्र) रहती है जहन में...।" यह सभी प्रक्रियाएँ और दशाएँ सम्मिलित रूप से शिक्षक की भूमिकाओं को विशिष्ट प्रकार के दबाव और तनाव से भर देती हैं जो उनके व्यवहार और आचार में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

प्रतिकूल परिस्थितियों में भी विद्यार्थियों को निरंतर प्रोत्साहित करते शिक्षक

कश्मीर की परिस्थितियाँ एक नियमित और सहज शिक्षण-अधिगम के माहौल के निर्माण को निरंतर चुनौतियाँ देती हैं। ये चुनौतियाँ प्रकृति में इतनी पेचीदा और कठोर होती हैं कि शिक्षण-अधिगम के लिए प्रतिकूल परिस्थितियों का निर्माण करती हैं, परंतु इन प्रतिकूल परिस्थितियों में भी प्राथमिक शिक्षक प्रयास करते हैं कि वे विद्यार्थियों को सकारात्मक रूप से प्रोत्साहित रख पाएँ। इसके लिए शिक्षक विद्यालयों में उनकी मौलिक आवश्यकताओं को पूरा करने के

© NCERT not to be republished

लिए हमेशा प्रयासरत रहते हैं। कक्षागत प्रक्रियाओं में भी शिक्षक पूरा प्रयास करते हैं कि विद्यार्थियों की अभिरुचि संबंधित विषयों के प्रति बनाई जा सके। हालाँकि, शिक्षकों के पास प्रायः सहायक शिक्षण संसाधनों का अभाव होता है परंतु फिर भी इस अभाव के बावजूद शिक्षक प्रयास करते हैं कि विषयों को पढ़ाने के दौरान ऐसी शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाए जिससे विद्यार्थी विषय का दबाव महसूस न करें और साथ ही साथ वह कुछ नया सीखें। प्रस्तुत पत्र भी इस संबंध में शोध क्षेत्र से कुछ साक्ष्य जुटाता है जिनको उपरोक्त विश्लेषण में प्रस्तुत किया गया है। इस पूरी प्रक्रिया में विद्यार्थियों और अभिभावकों की भूमिका को भी पूर्ण रूप से नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते हैं। शोध के दौरान यह स्पष्ट रूप से पाया कि विद्यार्थी भी प्रतिकूल परिस्थितियों में विद्यालय में बने रहते हैं और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का हिस्सा बनते हैं। विद्यार्थियों की इस नियमित उपस्थिति का कारण उनके अभिभावकों में शिक्षा और शिक्षकों के प्रति एक प्रकार का विश्वास है जो शिक्षा के प्रति उनकी सकारात्मक मन:स्थिति को प्रतिबिंबित करता है। शिक्षक भी बातचीत करने के दौरान मानते हैं कि अभिभावक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सकारात्मक रूप से देखते हैं और मानते हैं कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए विद्यालय जाना अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध एक गुणात्मक शोध था और पूर्ण रूप से अपने शोध क्षेत्र के संबंध में संदर्भित था इसलिए प्रस्तुत निष्कर्ष किसी भी प्रकार के सामान्यीकरण का दावा प्रस्तुत नहीं करता है। निष्कर्ष को शोध क्षेत्र के संदर्भ में ही पढ़ा और समझा जाए। प्रस्तुत शोध कश्मीर के विद्यालयों में प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षकों की विद्यालय संबंधी चुनौतियों का एक पहलू प्रस्तुत करता है जिसके अंतर्गत शिक्षकों की वे विशिष्ट चुनौतियाँ उभरकर हमारे सामने आती हैं जिनका सामना सामान्य परिवेश में स्थित विद्यालयों में शिक्षक, प्रायः नहीं करते हैं। ये चुनौतियाँ अधिकांशतः विद्यार्थियों की मनःस्थिति, विद्यालयों में उपस्थित मूलभूत सुविधाओं और आस-पास के माहौल से उत्पन्न विशिष्ट ज़िम्मेदारियों से संबंधित हैं। कश्मीर में उपस्थित द्वंद का माहौल प्राथमिक शिक्षकों की भूमिका को जटिल बनाता हुआ प्रतीत होता है, परंतु शिक्षक अपनी इच्छाशक्ति के बल पर इन चुनौतियों का डटकर मुकाबला करते हुए दिखते हैं, जिसके अंतर्गत वे प्रायः परिस्थितियों के अनुरूप नवीन रणनीतियों का चयन और कुशल कार्यान्वयन करते हैं। इस पूरी प्रक्रिया में विद्यार्थी और उनके अभिभावक भी अधिकांशतः शिक्षकों के प्रयास के महत्व को समझते हैं और वे भी पूरा प्रयास करते हैं कि शिक्षकों का हर संभव सहयोग करके विद्यालय में स्वस्थ और अर्थपूर्ण शिक्षण-अधिगम माहौल को बनाया जाए।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

करामी, बी. 2016. एक्सप्लोरिंग टीचर्स प्रॉफेशनल आइडेंटिटी इन दी कांटेक्स्ट ऑफ वार ज़ोन— ए केस फ्रॉम पेलेस्तीन. *अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*, वॉल्यूम 4, pubs.sciepub.com/education/4/2A/3/index.html

जनेले कॉक्स. 2019. व्हाट इज़ दी रोल ऑफ़ ए टीचर?. https://www.thoughtco.com/what-is-the-role-of-a-teacher-2081511 दिनांक 1.08.2019 को देखा गया.

जेरसन, एस. कटोटो. 2016. टीचर्स इन दी वार ज़ोन— ए हर्मेनुएटिक्स फ़ेनोमेनोलोजी. *जर्नल ऑफ़ ह्यूमनिटीज़ एंड सोशल साइंस*, वॉल्यूम 21, न. 11, 10, पृ. 50–55.

मुदासिर, अहमद., और ए. ठानिकोडी. 2016. पीस एंड डेवलपमेंट ऑफ़ एजुकेशन इन जम्मू एंड कश्मीर. *एशिया पेसिफ़िक जर्नल ऑफ रिसर्च*, 2 (18).

यूनेस्को. 2011. *दी हिडेन क्राइसिस— आर्मड कॉन्फ़्लिक्ट एंड एजुकेशन*. यूनेस्को, फ्रांस.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (ड्राफ्ट). 2019. पृ. 157. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*. राष्ट्रीय शैक्षिण अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

लवीना, डी. और एम. मोंटेरो. 2017. ए स्टडी ऑन दी चैलेंजेस ऑफ़ गवर्नमेंट प्राइमरी स्कूल टीचर्स इन साउथ कन्नड़ डिस्ट्रिक्ट. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ केस स्टडीज़ इन बिज़नेस*, आई.टी. एंड एजुकेशन, 1(2), पृ. 44–51 .

शर्मा, एम., और एस. मोहम्मद. 2019. दी इंपेक्ट ऑफ़ इंसरजेंसी ऑन एजुकेशन सेक्टर इन कश्मीर: इशूज़ एंड कंसर्नस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसेंट टेक्नालॉजी एंड इंजीनियरिंग*, 7 (6 एस 5), 2019

© NCERT not to be republished